INDIA TODAY HINDI, Delhi, 17.10.2018
Page No. 58, Size:(20.85)cms X (28.24)cms.

खौलते तेल की मार

अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें बढ़ने की वजह से घरेलू उपयोग की सारी वस्तुओं—खेत से लेकर खाने की मेज तक—की बढ़ रहीं हैं कीमतें

शुभम शंखधर

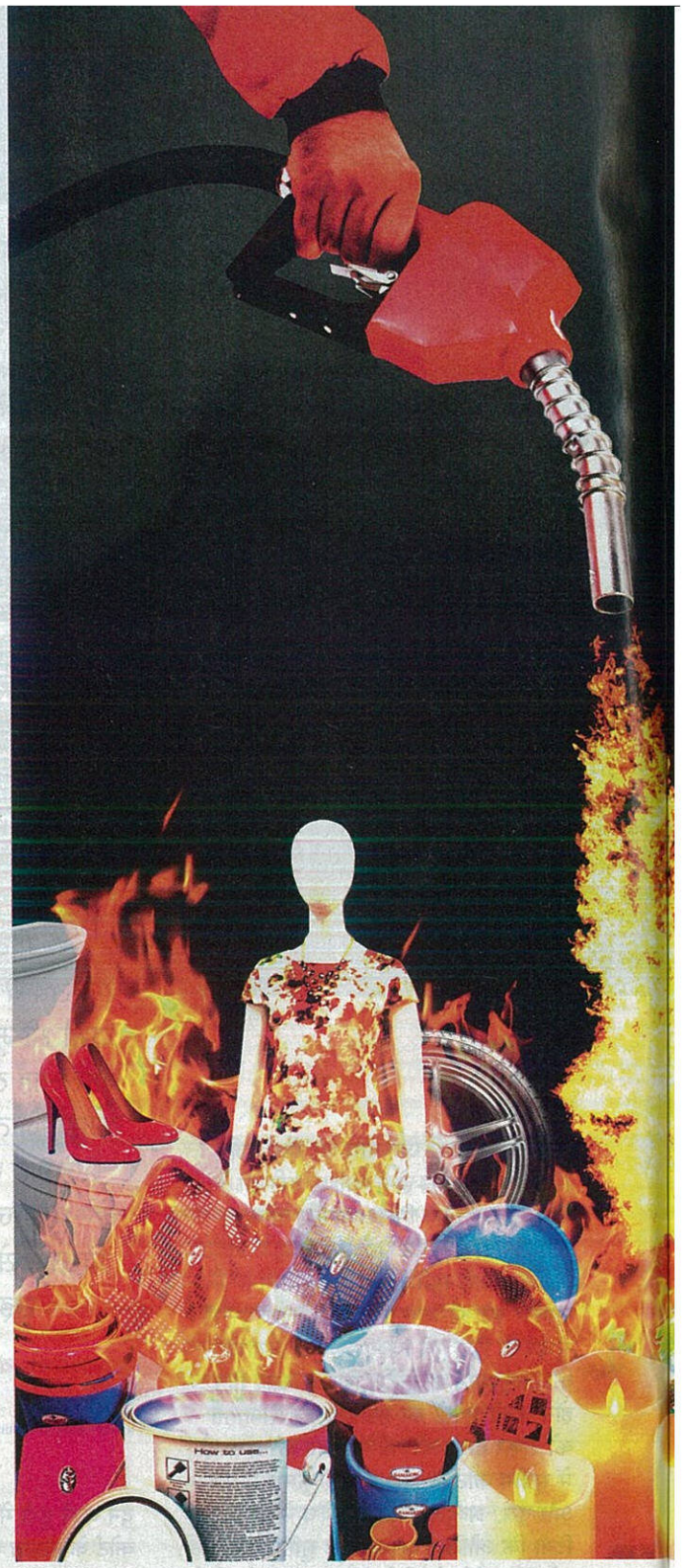

डिजिटल रेखांकनः तन्मय चक्रवर्ती

अगर आप रोजाना पेट्रोल पंप की कतार में नहीं भी लगते हैं तब भी कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों की मार से खुद को अछूता न समझें. पेट्रोल और डीजल के बढ़ते दामों के अलावा उबलते तेल से उपजती महंगाई भले चर्चा का विषय न बने लेकिन दबे पांव यह आपकी जेब में सेंध लगा लेती है. मसलन, बीते कुछ महीनों में अगर राशन का बिल बढ़ गया हो, बिस्कुट, चिप्स, साबुन, सर्फ के पैकेट का वजन घटा हो, घर पर पेंट करवाने का खर्चा उम्मीद से ज्यादा आ रहा हो या ऑटो-टेंपो वालों ने किराया बढ़ा दिया हो, तो हैरान मत होइए, ये सब कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के ही साइड इफेक्ट हैं.

दरअसल, पेंट, प्लास्टिक, पैकेजिंग मटीरियल, टेक्सटाइल्स, कॉस्मेटिक्स, दवा-उर्वरक समेत कई अन्य उद्योगों में तेल या इससे बनने वाले उत्पादों का इस्तेमाल होता है. ऐसे में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने पर कंपनियों की लागत बढ़ जाती है और कंपनियां कई रास्तों से इसे उपभोक्ता तक पहुंचाती हैं. यही कारण है कि पेंट, पॉलिश, बाल्टी, मग्गा, मोमबत्ती, चिप्स, बिस्किट, वैसलीन, साबुन, सर्फ, छाता, परफ्यूम, नेल पॉलिश जैसी दैनिक उपयोग में आने वाली कई छोटी-बड़ी चीजों के या तो दाम बढ़ जाते हैं या फिर कंपनियां पैकेट के अंदर के सामान की मात्रा को कम कर देती हैं. गौरतलब है कि बीते एक साल के दौरान कच्चे तेल की कीमतों में 43 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है. सितंबर 2017 में अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत 57.54 डॉलर प्रति बैरल (करीब 159 लीटर) के स्तर पर थी, वहीं सितंबर 2018 में भाव 82 डॉलर के करीब थे.

तेल की तेजी बाकी है

वैश्विक और घरेलू दोनों ही बाजारों में कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के अनुमान लगाए जा रहे हैं. कार्वी स्टॉक ब्रोकिंग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राजीव सिंह कहते हैं, ''2018 के अंत तक कच्चे तेल की कीमतें 90 डॉलर प्रति बैरल का स्तर छू सकती हैं. अगर पूरे साल में कच्चे तेल की कीमत औसतन 90 डॉलर रहती हैं, तो सरकार के चालू खाता घाटे पर 0.3 फीसदी का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा.''

कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें आम आदमी के लिए तो महंगाई लेकर आती ही हैं, साथ ही सरकार के लिए भी सिरदर्द बनती हैं. राजीव कहते हैं, ''कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के कारण जिन

INDIA TODAY HINDI, Delhi, 17.10.2018
Page No. 58, Size:(20.85)cms X (28.24)cms.

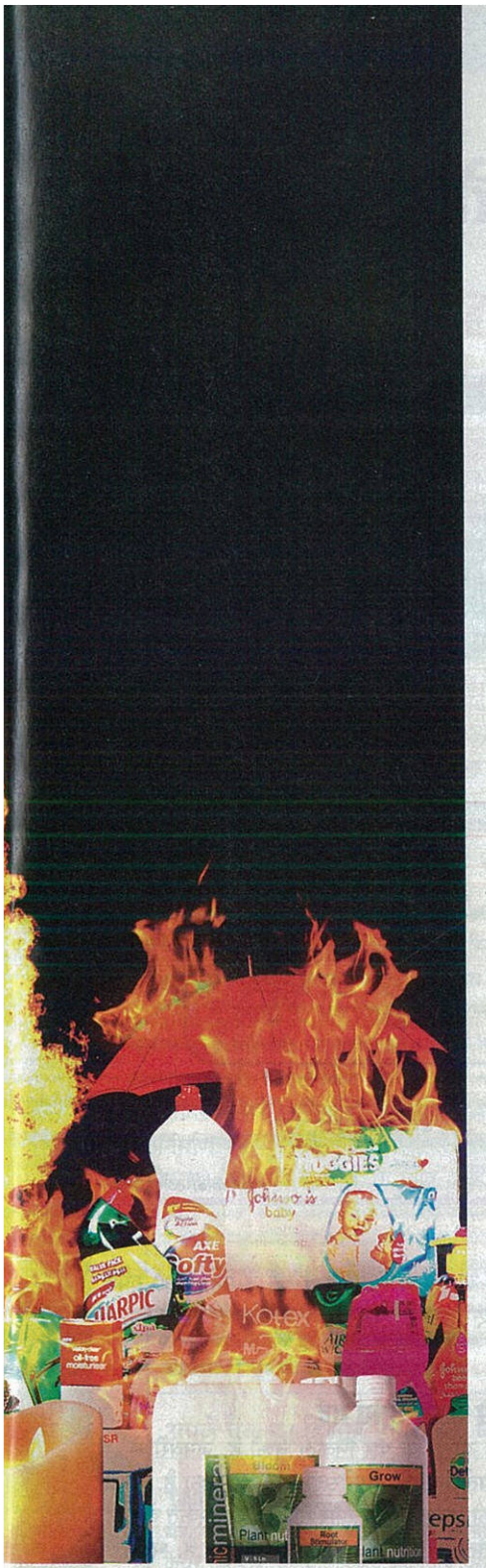

"2018 के दौरान वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमत औसत 90 डॉलर रहेगी जिसका असर कंपनियों के मार्जिन पर दिखेगा."

राजीव सिंह
सीईओ, कार्वी स्टॉक ब्रोकिंग

"बीते एक साल में कच्चे तेल की कीमतों में 40 फीसदी से ज्यादा की तेजी आई है, पैकेजिंग मटीरियल भी इसी अनुपात में महंगा हुआ है."

राजीव भाटिया
सीएफओ, यूफ्लेक्स लिमिटेड

"ट्रांसपोर्टेशन की लागत 20 फीसदी तक बढ़ जाने के कारण उपभोक्ताओं के लिए प्लास्टिक से बना सामान महंगा हो गया है."

आर पद्मासानन
डीजीएम (इम्पोर्ट), सुप्रीम इंडस्ट्रीज

पैकेट में बंद महंगाई

आजकल बिकने वाले ज्यादातर उत्पादों में पैकिंग का विशेष महत्व होता है. एफएमसीजी कंपनियां हों या कॉस्मेटिक्स—ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उत्पादों की पैकिंग पर खासा ध्यान देती हैं. पैकेजिंग मटीरियल क्षेत्र में देश की दिग्गज कंपनी यूफ्लेक्स के मुख्य वित्तीय अधिकारी राजीव भाटिया कहते हैं, ''पैकेजिंग मटीरियल इंडस्ट्री की लागत में 50 फीसदी की हिस्सेदारी कच्चे तेल से निकलने वाले उत्पादों की ही है. ऐसे में जिस तरह बीते एक वर्ष में कच्चे तेल की कीमतें तकरीबन 50 फीसदी बढ़ी हैं उसी अनुपात में पैकेजिंग फिल्म भी महंगी हुई है.'' कच्चे माल के अलावा पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतों के कारण ट्रांसपोर्टेशन की कॉस्ट भी बढ़ी है. राजेश कहते हैं, ''कंपनी के मार्जिन पर खास असर नहीं पड़ेगा क्योंकि हमने पूरी बढ़ोतरी अपने ग्राहक कंपनियों को आगे बढ़ा दी है. ऐसे में उपभोक्ता के स्तर पर महंगाई बढ़ना स्वाभाविक है.'' कंपनियों के बिजनेस में 15 से 20 फीसदी तक हिस्सेदारी पैकेजिंग की होती है. सबसे ज्यादा असर ऐसी कंपनियों पर पड़ता है जिनके पैकेट तो बड़े होते हैं अंदर सामान की मात्रा कम होती है. मिसाल के तौर पर, चिप्स, नमकीन आदि.

महंगी होगी दीवाली

इस दीवाली अपने घर को रौशन करने के लिए मोमबत्ती खरीदने से लेकर पेंट करवाने तक के लिए आपको ज्यादा पैसे खर्च करने होंगे. बर्जर पेंट्स इंडिया लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी अभिजीत रॉय कहते हैं, ''ग्लोबल मार्केट की तर्ज पर घरेलू बाजार में भी कच्चे तेल की कीमतों में उछाल आया है. बढ़ी हुई लागत के असर को कम करने के लिए इस साल पेंट कंपनियां दो बार कीमतें बढ़ा चुकी हैं.'' पेंट, थिनर इन सब चीजों का इस्तेमाल घर में पेंट कराने के दौरान होता है. तेल की बढ़ती कीमतों से ये सभी चीजें महंगी हो जाती हैं. रॉय यह भी कहते हैं, ''समय के साथ लोगों की पसंद भी बदल रही है, इसी वजह से शहरों में प्रीमियम प्रोडक्ट की डिमांड लगातार बढ़ रही है.''

टेक्सटाइल्स और पेपर इंडस्ट्री को केमिकल सप्लाई करने वाली कंपनी राजीव केमिकल प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक राजीव शर्मा कहते हैं, ''कच्चे तेल की कीमतों में आई तेजी के कारण बीते एक साल में टेक्सटाइस इंडस्ट्री में इस्तेमाल होने वाली डाइ की कीमत 30 फीसदी से ज्यादा बढ़ गई है. इसके अलावा ट्रांसपोर्ट की लागत में भी बढ़ोतरी हुई है. इसका असर कपड़े की कीमतों पर पड़ेगा'' टेक्सटाइल्स इंडस्ट्री में डाइ से जुड़ी लागत का हिस्सा 30 से 35 फीसदी होता है. पॉलीएस्टर भी कच्चे तेल का ही एक बाइप्रोडक्ट है, जिसका इस्तेमाल भारी मात्रा में कपड़े बनाने में होता है. ऐसे में दीवाली पर कपड़ों की कीमत आपको पिछले साल से ज्यादा मिलेगी.

क्षेत्रों की कंपनियों पर सबसे ज्यादा असर होता है उनमें एविएशन, ट्रांसपोर्ट ऐंड लॉजिस्टिक, पेंट, एफएमसीजी, टायर, पेट्रो केमिकल, सीमेंट प्रमुख हैं.'' इन क्षेत्रों की कंपनियों के मुनाफे पर एक से साढ़े तीन फीसदी तक की चोट पहुंचेगी, जिसका असर उत्पादों की कीमतों पर भी देखने को मिलेगा. ऐसे में सरकारी आंकड़ों में भले आपको महंगाई बढ़ती न दिखे लेकिन त्यौहारों की खरीदारी के दौरान जमीन पर आप इसे जरूर महसूस कर सकेंगे.

INDIA TODAY HINDI, Delhi, 17.10.2018
Page No. 58, Size:(20.85)cms X (28.24)cms.

जनता का निकलता तेल

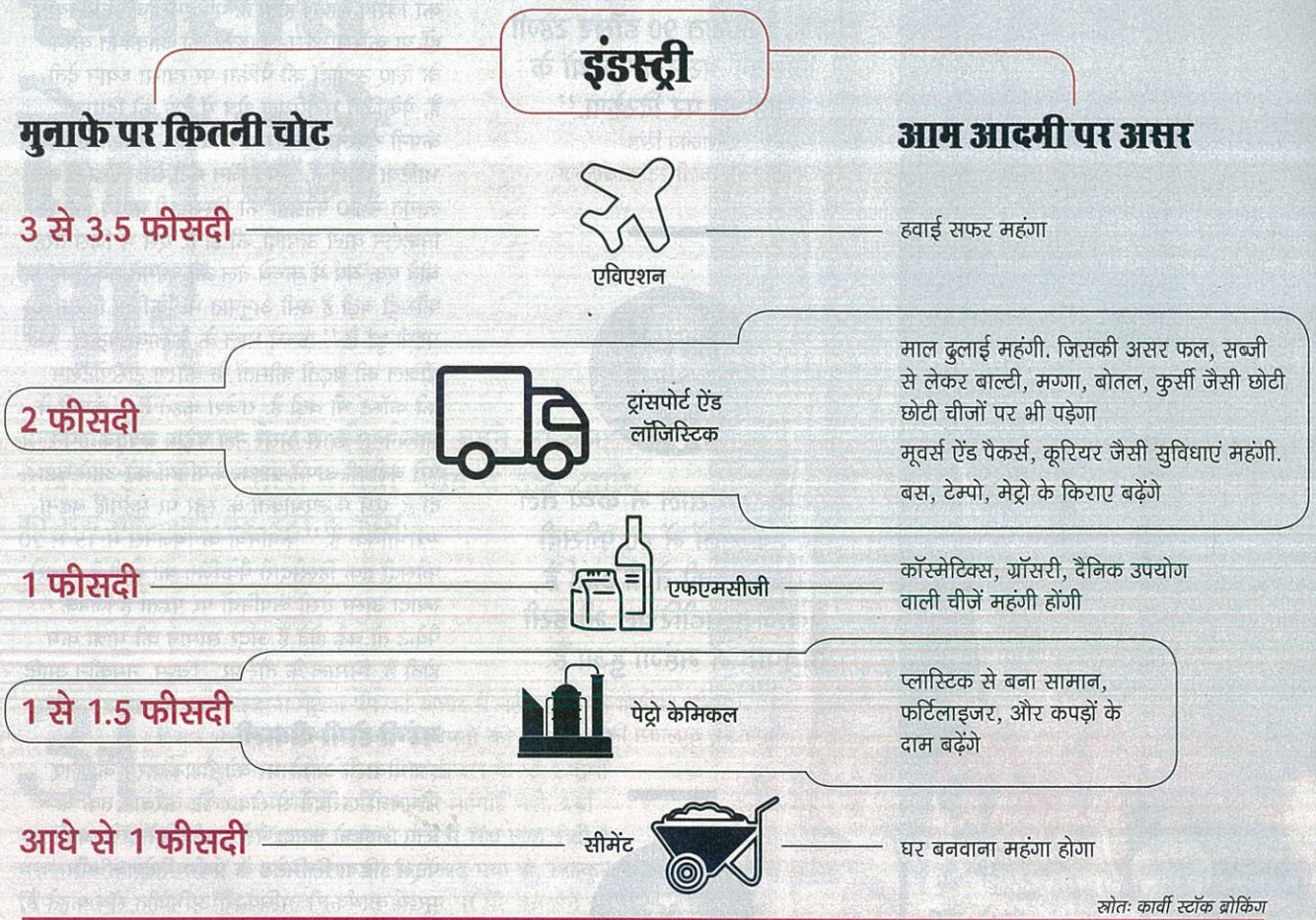

स्रोतः कार्वी स्टॉक ब्रोकिंग

पेट्रोल-डीजल की कीमतें बढ़ जाने के कारण ढुलाई और सवारी गाड़ियों के किराये में भी बढ़ोतरी हुई है. ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस में दिल्ली-एनसीआर के चेयरमैन त्रिलोचन सिंह ढिल्लों कहते हैं, ''डीजल की कीमत जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, किराए में बढ़ोतरी होती जाती है. पिछले साल की तुलना में इस समय ट्रक के भाड़े में 25 फीसदी बढ़ोतरी हुई है.'' माल ढुलाई बढ़ने का असर बड़े स्तर पर होता है. एक ओर जहां गांव से शहरों की मंडी तक पहुंचने वाली सब्जी महंगी हो जाती है, वहीं दूसरी तरफ शहरों में टैक्सी के भाड़े बढ़ जाते हैं. कारखानों से निकलने वाले सामान को उपभोक्ता तक पहुंचाने में ट्रांसपोर्टेशन की लागत बड़ा हिस्सा रखती है.

प्लास्टिक प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनी सुप्रीम इंडस्ट्रीज के डिप्टी जनरल मैनेजर (इंपोर्ट्स) आर. पद्मासनन कहते हैं, ''प्लास्टिक प्रोडक्ट बनाने के लिए जरूरी रॉ मटीरियल का आयात किया जाए तो कीमतों में बहुत ज्यादा बढ़ोतरी नहीं हुई है, लेकिन ट्रांसपोर्टेशन की लागत 20 फीसदी तक बढ़ गई है जिसके कारण उपभोक्ता को सामान महंगा मिल रहा है.'' मुंबई से दिल्ली तक ट्रक भेजने में तीन महीने पहले 90,000 रु. लगते थे, अब 1,15,000 रु. का खर्चा आता है. ऐसे में उपभोक्ता को निश्चित तौर पर प्लास्टिक से बनी चीजें महंगी मिलेंगी. पद्मासानन कहते हैं, ''देश में महंगाई की एक बड़ी वजह टैक्स ढांचे में व्याप्त खामियां हैं. मुंबई में पेट्रोल 90 रुपए लीटर है, जिसमें 47 रुपए टैक्स है. यह टैक्स जनित महंगाई का बड़ा हिस्सा है.''

रुपए की कमजोरी से गहरा हुआ दर्द

एक डॉलर की कीमत 74 डॉलर के पार निकल चुकी है. जनवरी से अब तक डॉलर के मुकाबले रुपया 14 फीसदी तक टूट चुका है. बाजार के मौजूदा हालात रुपए की कमजोरी के और गहराने का संकेत दे रहे हैं. कमजोर रुपया कच्चे तेल की महंगाई को और बढ़ा रहा है. भारत अपनी कुल खपत का करीब 80 फीसदी तेल आयात करता है. कमजोर रुपए के कारण कच्चा तेल आयात करने के लिए ज्यादा डॉलर खर्च करने पड़ते हैं. इसका असर सरकारी खजाने से लेकर आम आदमी की जेब तक होता है.

कच्चे तेल के उत्पादों से बनने वाली चीजों की फेहरिस्त देखेंगे तो लगेगा कि तेल के बिना जीवन संभव नहीं है. कच्चा तेल जब अपने निचले स्तर पर था तो टैक्स की मार के कारण भले महंगाई में कमी महसूस न हुई हो लेकिन त्यौहारों पर फीकी पड़ती रौनक महंगाई का एहसास जरूर करा देगी. दुआ कीजिए कि जल्द वैश्विक बाजार की चौसर में समीकरण ऐसे बने कि तेल के दाम का उफान ठंडा पड़े. ■